वैश्वीकरण का प्रभाव
(IMPACT OF GLOBALIZATION)

वैश्वीकरण का आशय लोगों व विचारों के मुक्त प्रवाह से है जिससे एक स्थान पर हो रहे विकास का लाभ अन्य लोग भी उठा सके। इसका प्रभाव सकारात्मक व नकारात्मक दोनों रूपों में दिखाई पड़ता है।

वैश्वीकरण से लाभ (Advantages of Globalization)

(1) वैश्वीकरण की प्रक्रिया द्वारा **विश्व नागरिकता की भावना का विकास** होता है जिसके अनुसार प्रत्येक राष्ट्र सभी राष्ट्रों के नागरिकों का ध्यान रखकर नीतियों का निर्धारण करता है।

(2) **वैश्वीकरण द्वारा ही ज्ञान का सर्वव्यापीकरण** (Omnipresence of Knowledge) सम्भव हुआ है जिस कारण एक देश में होने वाले आविष्कार केवल उसी देश की सम्पत्ति मात्र नहीं रहते बल्कि वे सम्पूर्ण विश्व धरोहर बन जाते हैं। इससे दोनों देशों के बीच का अन्तर समाप्त हो जाता है।

(3) वैश्वीकरण द्वारा **शिक्षा की सर्व उपलब्धता** (Availablity of Education for all) सम्भव हुई है। शिक्षा को सर्वसुलभ बनाने हेतु वैश्वीकरण अति आवश्यक है।

(4) वैश्वीकरण के कारण ही **विश्वस्तरीय समस्याओं का समाधान** जिनमें शान्ति, सुरक्षा, गरीबी, अशिक्षा व बेरोजगारी आदि प्रमुख हैं, भी सम्भव हुआ है। अत: वैश्वीकरण ऐसा माध्यम है जो सभी राष्ट्रों को परस्पर बाँधता है जिससे वे सभी अपनी समस्याओं का समाधान मिलकर कर सकें।

(5) वैश्वीकरण **आर्थिक विकास** में भी सहायक है। कोई भी राष्ट्र पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर नहीं बन सकता है। उसे किसी न किसी वस्तु के लिए अन्य राष्ट्रों पर आश्रित होना ही पड़ता है और आर्थिक विकास करने के लिए राष्ट्र एक-दूसरे का सहयोग करते हैं।

वैश्वीकरण से हानियाँ (Disadvantages of Globalization)

जहाँ वैश्वीकरण के कुछ लाभ हैं, वहीं इसकी कुछ हानियाँ या नकारात्मक प्रभाव भी हैं जो निम्नलिखित हैं—

(1) भारत में अंग्रेजी का इतना प्रयोग होने लगा है कि अन्य भाषाओं का अस्तित्व ही समाप्त हो रहा है। यहाँ तक कि लोग अपनी मातृभाषा से भी अनभिज्ञ होते जा रहे हैं।

(2) दूरस्थ शिक्षा का प्रचलन बढ़ा है जिससे शिक्षा के व्यापारीकरण को बल मिला है व शिक्षा एक बाजारी वस्तु बन गई है।

(3) इंटरनेट के बढ़ते प्रचलन के कारण बच्चों का सांस्कृतिक विकास बाधित हो रहा है।

(4) शिक्षक व छात्र का सम्बन्ध भी समाप्त होता जा रहा है।

इन दुष्प्रभावों (हानियों) के बावजूद वैश्वीकरण के महत्त्व से इंकार नहीं किया जा सकता है क्योंकि वैश्वीकरण के कारण ही विश्व को एक बाजार के रूप में देखा जाता है, परन्तु आवश्यकता यह है कि इसे एक परिवार के रूप में देखा जाये। एक ऐसा परिवार, जहाँ संस्कृतियों में संवाद हो, धर्मों में सद्भाव हो, ज्ञान का प्रकाश हो, आर्थिक सहयोग हो। हमें ऐसे ही एक नये विश्व का निर्माण करना है।

शिक्षा में निजीकरण से लाभ
(ADVANTAGES OF PRIVATIZATION IN EDUCATION)

शिक्षा में निजीकरण से लाभ निम्नलिखित हैं–

(1) अधिकांश विकासशील देशों में सरकार की तुलना में गैर-सरकारी संगठन शिक्षा सेवा उपलब्ध कराने के कार्य में अधिक संख्या में लगे हुये हैं।

(2) निजी शिक्षण संस्थायें प्राय: इस बात को सुनिश्चित करने के लिये प्रतिबद्ध होती हैं कि शिक्षा निर्धनतम तथा सर्वाधिक वंचित वर्गों तक पहुँचे।

(3) यदि उच्च शिक्षा में सरकारी खर्च में कमी कर दी जाती है तो वर्तमान शिक्षा अधिभार को भी हटाया जा सकता है।

(4) शिक्षा में निजीकरण से भारत को सूचना तकनीकी, बायोटेक्नोलॉजी व नैनो टेक्नोलॉजी के क्षेत्रों में उन्नति करने में मदद मिलती है।

(5) शिक्षा में निजीकरण द्वारा शिक्षण अधिगम क्षमताओं के विकास हेतु अधिक अवसर मिलते हैं जिससे शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार होता है।

(6) सरकारी संस्थानों की अपेक्षा निजी संस्थानों में रोजगार के अवसर अधिक उपलब्ध हो पाते हैं।

(7) निजी संस्थाओं में छात्रों को अधिक क्रियाकलाप करने के अवसर प्राप्त होते हैं।

(8) निजी संस्थाओं में व्यावहारिक रूप से किसी राजनैतिक हस्तक्षेप की सम्भावना नहीं रहती है।

(9) निजीकरण से आधारभूत ढाँचे को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक ले जाया जा सकता है।

(10) निजी विश्वविद्यालयों में उन नई तकनीकियों का क्रियान्वयन किया जा सकता है जिन्हें राज्य की अनुमति के बिना किया जाना असम्भव था।

(11) निजी कॉलेज प्रशासन की दृष्टि से भी स्वतन्त्र होते हैं।

शिक्षा में निजीकरण के दोष
(DEMERITS OF PRIVATIZATION IN EDUCATION)

उच्च शिक्षा में निजीकरण के दोष निम्नलिखित हैं–

(1) शिक्षा के कुछ क्षेत्रों में निजीकरण द्वारा गुणवत्ता की गारण्टी नहीं रहती है।

(2) निजीकरण द्वारा शिक्षा के व्यावसायीकरण का खतरा बना रहता है।

(3) निजीकरण द्वारा शिक्षा के व्यावसायीकरण निजीकरण द्वारा अर्न्तसांस्कृतिक व अन्तर्सामाजिक परिवर्तन भी सम्भव है। जिन्हें भारतीय द्वारा स्वीकार नहीं किया जा सकता है।

शिक्षा में उदारीकरण के सकारात्मक प्रभाव
(POSITIVE IMPACTS OF LIBERALIZATION)

(1) उदारीकरण द्वारा देश की वित्तीय व्यवस्था में सुधार होगा जिसमें अनुसन्धान उदारीकरण, निजीकरण व वैश्वीकरण के युग में विद्यालयों का बदलता स्वरूप छात्रों के भविष्य के लिए यह सुखद परिणाम देगा।

(2) इससे शिक्षकों की पूर्ति सेवाओं व शैक्षणिक संस्थानों की आपसी प्रतिस्पर्धा यह सुनिश्चित करेगी कि वे शिक्षा पर अधिक अधिकार नहीं लेंगे। शिक्षा के साधनों की पूर्ति में वृद्धि स्वतः ही शिक्षा के खर्चों में कमी लायेगी।

(3) भारतीय अर्थव्यवस्था जिसे मुख्यतः सेवा आधारित उद्योग में सशक्त किया गया है, में शिक्षा के उदारीकरण द्वारा तेजी से आर्थिक स्त्रोत प्राप्त होंगे।

(4) सैकड़ों व हजारों भारतीय छात्र जो विदेशों में लगभग प्रतिवर्ष पाँच से दस लाख रुपये खर्च कर अध्ययन करते हैं व हजारों की संख्या में जो छात्र विदेशों में बस जाते हैं उदारीकरण द्वारा भारत की इस मानव पूँजी की बचत होगी।

(5) कारपोरेट जगत को मान्यता मिल जाने से अच्छे उद्योगों पर आधरित व विशेष कौशलों से युक्त स्नातकों का विकास सुनिश्चित होगा।

(6) शिक्षित जनसंख्या में वृद्धि से तकनीकी व संचार सुविधाओं में तीव्र वृद्धि होगी इससे समाज की औद्योगीकरण आधारित दिशा का सूचना आधारित समाज की तरफ हस्तान्तरण होगा।

(4) निजी स्तर पर संचालित कॉलेजों में अध्यापकों का शोषण किया जाता है जिससे अध्यापन का स्तर गिरता है।

(5) सामाजिक रूप से वंचित लोगों के लिये इन निजी उच्च शैक्षिक संस्थाओं में प्रवेश की कोई गारण्टी नहीं होती।

(6) निजी शिक्षण छात्र को उपभोक्ता व क्रेता की दृष्टि से देखता है।

(7) निजी शिक्षण संस्थाओं में छात्रों के मानवीय व नैतिक मूल्यों का हनन होता है।

(8) निजी संस्थाओं में अध्यापकों की भूमिका गौण होती है।

(9) निजी संस्थान प्रायः प्रबन्धकों के हाथों में संचालित होते हैं चाहे उन्हें शिक्षा शिक्षण का ज्ञान हो या न हो।

(10) निजी शिक्षण संस्थाओं में शिक्षकों के वेतन नियमों व अवकाश के नियमों में अत्यन्त अनियमितायें पाई जाती हैं।

(11) निजी संस्थान सामन्तवादी व्यवस्था का एक स्वरूप है। यह मध्यम व निम्न वर्ग में अप्रत्यक्ष रूप से असन्तोष की भावना को बढ़ाते हैं।

शिक्षा में उदारीकरण के नकारात्मक प्रभाव
(NEGATIVE IMPACTS OF LIBERALIZATION)

(1) शिक्षा के क्षेत्र में मूल्य आधारित शिक्षा का प्रभाग नगण्य हो जाने की सम्भावना है।

(2) शिक्षा की गुणवत्ता का स्तर गिर जायेगा क्योंकि हर व्यक्ति पैसे व पहुँच के बल पर शिक्षा प्राप्त करने के अवसर प्राप्त कर लेगा।

(3) प्रतिभावान छात्रों के प्रतिभा का सदुपयोग सम्भव नहीं हो सकेगा क्योंकि उनकी प्रतिस्पर्धा में ऐसे छात्र अवसर पा जायेंगे जिन्होंने पैसे व पहुँच के बल पर ऊँची डिग्रियाँ प्राप्त कर ली हैं।

(4) उदारीकरण द्वारा कुछ ऐसे झूठे संस्थानों का भी खतरा बना रहता है जो केवल मौका पाते ही अपनी जेब भरने को तैयार रहते हैं।

(5) भारत में अत्यधिक भ्रष्टाचार व्याप्त है अतः यह भी सम्भव है कि इस तरह की नीति द्वारा रिश्वतखोरी झूठी डिग्री पक्षपातरहित अंकन को भी बढ़ावा मिल सकता है। ये सब उदारीकरण के कुछ ऐसे अनदेखे प्रभाव है जो घटनाओं के घटित होने पर प्रकाश में आते हैं।

(6) स्थानीय संस्थान जिनके पास सीमित पूँजी होती है, टिक नहीं पाते हैं। यहाँ तक कि प्रतिष्ठित संस्थान भी इस प्रतियोगिता से प्रभावित होते हैं क्योंकि उनके द्वारा दिये गये राष्ट्रीय प्रमाण-पत्र विश्व मान्यता प्राप्त प्रमाण-पत्रों से कम महत्वपूर्ण हो जाते हैं।

(7) भारत में छात्र इस तरह की सुविधाओं का लाभ बिना किसी पुख्ता सूचना व समझ के लेने को तैयार रहते हैं तथा विदेशी डिग्रियाँ का लालच उन्हें बुद्धिहीन व सूचना विहीन बना देता है कुछ निचले स्तर के संस्थान इन विकासशील देशों में निम्नस्तरीय कॉलेजों व यूनीवर्सिटी से सहभागिता भी बना लेते हैं।